॥ श्रीजानकीबल्लभो बिजयेते ॥

श्रीस्वामी अग्रदास जी महाराज कृत

अष्टयाम पदावली

संग्रहकर्ता:-

श्रीसीताराम रहस्य विकासक

आचार्य प्रवर अनन्त श्रीस्वामी अग्रदेवजी के वंशावसंत

अनन्त श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर)

तच्चरणारबिन्द भ्रमर

श्रीजानकी शरण मधुकरिया

सं० २०३७

प्यारी झूलैं लाल झुलावैं भली बनी सजनी ।
उड़ि उड़ि अचरा-परत भुजनि पर डरपति शशि बदजी ॥
विपिन प्रमोद लता कुंजन में श्री सरयु के तटा ।
सिय प्यारी के झूलना वे निरखति अग्र छटा ॥२३०

दशरथ सुत अरु जनकनन्दनी चितवनि में चित चोरैरी ।
नान्हि २ बुन्द पवन पुरवैया बरषत थोरे थोरे री ॥
हरि २ भूमि घटा झुकि आई सर्यू लेत हिलोरे री ।
उपवन बाग विहंगम बोलैं दादुर मोर चकोरे री ॥
हयदल पयदल गजदल रथदल कोटि बने चहुँ ओरे री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डभ शंखन की घनघोरे री ॥
नागरि नाम लिवावैं पिय को सियजू हँसि मुख मोरेरी ।
अग्रदास हरि रूप निहारे चरण कमल बलिहारैं री ॥२३१

झूलत नवल दशरथ लाल ।
सरयु तीर प्रमोदबन में लिये संग सिय बाल ॥
अरुण मणिमय हेम डाँड़ी रतन खम्भ विशाल ।
गुही रेशम डोरि मोतिन पटुलि जटित प्रबाल ॥
लखि विचित्र हिडोल विमला नटति दै करताल ।
हेरि हरि मुख देति झोका परी छबि के जाल ॥
प्रेम बस लखि गही प्रीतम बोलि बचन रसाल ।
राम सखे विलोकि यह रस कोन होत निहाल ॥२३२

दशरथ राजदुलारे सिया संग झूलै हो ।

सर्यू किनारे सुहावनि कदम जुरि छहियाँ हो ॥
ताहि तरे झूलैं हिंडोला दिये गल बहियाँ हो ।
एक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो ॥
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो ।
प्यारी के लट पिया जुलुफन झूलत अरुझैं हो ।
अचल रहैं सखि स्यामा कबहुँ नहिं सुरझैं हो ॥२३३

राग सोरठा—नवल रसिक झूलैं, प्यारी सँग लीन्हें ।
मन सो मन दृग सो दृग दीन्हे ॥
चारुशिला अलि हरषि झुलावैं गावै तान नवीने ।
बजत मृदंग ताल सारंगी लेत तान स्वर भीने ॥
बढ़त उमंग अंग अँग छिन २ पिय प्यारी रँग मीने ।
ज्ञाना अलि छबि निरखत ठाढ़ी सो समाज तित कीन्हे॥२३४

रसिया ना मानैं सजनी झूलत मन न अघाय ।
सोवति सजनी अपने भवन में औचक मोहिं जगाय ॥
वन प्रमोद कुंजन २ में नित उठि झूलत आय ।
ज्ञानाअलि सिय पिय सँग झुलिहौं अभय निशान बजाय ॥२३५

हिंडोरे झूलत कौशल चन्द ।
बाजहिं बाजन मधुर गान ध्वनि दशों दिशि होत अनन्द ।
सर्यू तीर शुभग शृंगार बन ललित परन फल फूले ।
गुंजहि भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहि पिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूल मय डोरी ।

फूलन के युग खम्भ मनोहर रचि पचि मदन सच्योरी ॥
फूल मुकुट पट लसत राम के फूलन के सिय सारी ।
नख शिख लौ फूलन के भूषण दम्पति अँग सँवारी ॥
फूल तरंग उठत सर्यू की फूल बरषि घन पानी ।
रामचरण सखि सब शृंगार किये फूल गान मय बानी ॥२३६

हिंडोले झूलत सिया रघुनन्द ।
चतुरी सखी नैनन सुख लीजै देखि २ दोउ चन्द ॥
सावन घन घमण्ड झुकि आयो मधुर २ झरि घोरे ।
मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहि नाचहि मोरे ॥
झूलहि रघुवर जनकनन्दनी सखियाँ झुलावहि जोरे ।
झूलहि झूमि जाँहि सर्यू में झुकि२ छुवहिं हिलोरे ॥
अति सुन्दर बन बन्यो हिंडोरा संग समाज सब झूलैं ।
इत उत झुकि २ झूलैं हिंडोलन मारहि गेंदन फूलैं ॥
झूलहिं सँग झुलावहिं बहु प्रिय मधुर २ स्वर गावैं ।
रामचरण नभ सुर तिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावैं ॥२३७

हिंडोले झूलत लड़िलि लाल ।
नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु वितान बन माल ॥
गर्जहि मधुर २ पिय मन लै कोकिल शब्द सुसाल ।
बरषत मेह झरत तरु अमृत बोलत मोरि रसाल ॥
श्री सरयू उमगत उज्वल जल लहरि उठत मनो जाल ।
त्रिविध पवन निन्दत मारुत चल पट फहरात सुलाल ॥

पद कर भूषण तड़ित नखत शशि निन्दत धनु सुर पाल ।
बहु सखि संग २ झूलात हैं बहुत झुलावत बाल ॥
गावहि मधुर लाल मन मोहैं करहिं विविध रस ख्याल ।
मनहु मदन रति के व्याहन कहँ साजि सकल निज जाल ॥
लारा विहार देखि बन भूल्यो बिशरि गयो सब हाल ।
यह रस रासि रसिक कोइ सखि सोंइ निशि दिन रहत निहाल ॥
रामचरण यह छांड़ि कहै कछु कारिख तेहि मुख भाल ॥२३८

हिंडोले झूलत प्यारो प्यारी ।
नव योजन गुन रूप नये दोउ रघुवर जनक दुलारी ।
अरुन वसन वर लसत दोउन तन मनि भूषन छविकारी ॥
इत प्यारी की हलात चन्द्रिका पिय कलँगी छबि भारी ।
मचकैं लेत हिचकि दोउ गति सों पग नूपुर झनकारी ॥
गावत अली मलार राग रुचि सोउ गति लेत सुधारी ।
कनक भवन मुद मंगल शोभा नित उछाह रसकारी ॥
रसिकअली वारत तन मन धन निरखि २ बलिहारी ॥२३९क

झूलत रसिक वर सुख कन्द ।
अंक लिये सुख स्वामिनी सिय लहत परमानन्द ॥
नेह भरि बोलत मधुर पिय उठत रस की तथंग ।
पट सुधारि सँवरि अलक सु पिवत मुख मकरन्द ॥
सुख सुहाग भरे अली गण देति झोका मन्द ।
झमकि झुकि २ लेति तानैं होत कोकिल मंद ॥

सरस सावन हरित चहुँ दिशि सरयु लेति तरंग।
श्री प्रेम अलि लखि ठाढ़ि सारद तकत उपमा वन्द ॥२३९।ख

झूलत रसिक मनि रघुनन्दन।
संग सिय अलवेलि नागरि वदन छबि बहु चन्द ॥
रतन जटित हिंडोलना लखि सुर शशि दुति मन्द।
रसिक अलि अलिगन झुलावति फँसी छबि के फन्द ॥२४०

प्यारो प्यारी को झुलावे गावे रस भरी तान ॥
कनक भवन में कनक हिंडोला रबि शशि ज्योति लजावै।
चहुँ दिशि लबित बितान बादले झालरि झुमका सुहावै ॥
इत घन गरजत रिमिझिमि वर्षत मृदु मृदंग धुनि छावैं।
रसिक अली सिय प्रीतम ऊपर बार २ बलि जावै ॥२४१

तेरी झमक झूलन पर वारि रे।
झूलन जोर मोर अँगन की चितवनि अति अनियारि रे ॥
पान खात गावत स्वर मधुरे छबि उमगत लग प्यारि रे।
कृपा निवास दाशि चरणन की अवध विलाश विहारिरे ॥२४२

झूलै झमकि झुलनवा लाल लली।
वन उपवन निन्दत नन्दन बन पूरि रह्यो फलि फलन फुलनवाँ॥
सुर निरखति अति दशन अधर धरि छबि छकी भारति-
जितन तुलनवां।
कोविद तन मन भुषन बसन सब करत निछावरि-
उपर हुलनवां ॥२४३॥

सिय जूहो झूलत फूल भई।
फूली २ फूल हिडोले अनुकूली अधिकई ॥
प्रीतम प्राण झुलावत छबि सो शोभा निरखि नई।
रूप रसिक रस छके परसपर मानत नहि तृपतई ॥२४४

झूलन कि झांकी अजब बनी है प्यारि सँग झूलै पियरवारे।
स्यामलि सुरतिया पै गोरि सिय सोहति अँखिनि में सोहै कजरवारे
भूषण बसन राम सिय राजत रति अनंग छबि छोरवा रे।
सरयू तीर प्रमोद विपिन में हरि लीन्हो मेरो हियरवा रे ॥
घन गरजे चमकै दामिनियां सुनि सुनि बोलत मोरवा रे।
नान्हि२ बुदिया परत भूमि पर धिरे धिरे बहत समिरवारे ॥
रामशरण दम्पति सुखमा लखि नैनन बहै जल धरवा रे।
झूलन कि झांकी में चित नहिं जाको जनु भूँकत कुकर
सियरवा रे ॥ २४५ ॥

झुलन्दा तेरी अँग अँग माधुरी जोर।
सुरँग पाग मोतिनदी कलँगी हँसि बोलनि चित्त चोर ॥
भृकुटी कुटिल नैन रतनारे हेरनि वंक मरोर।
प्रिया सखी दोउ अवध विहारी बलिहारी तृण तोर ॥२४६

झुलते हैं झुला मूला मुद लाल लली री।
झुलावै नजीर बना हीर मनि गना।
झुलावती हैं हुस्न भरी भीर अली री ॥
देता है आब अब्र जब्र हुकम दिल नसीन।

जाना जहान आन मानो कल्प कलीरी ॥
बागे बहार जागे दिलदार कार सब ।
धीरे समीरे सीरे गति लागि भली री ॥
गाते हैं गुणी ल्याते हैं तानैं अजब बहार ।
कोविद रचे हैं नाच परी दिल को छलीरी ॥२४७
राघो रमकि झुलावै प्यारी बाढ़त उमंग ।
लखि ललकि नवेली गावै नवल सुढंग ॥
सोहै भूषण अमोल मणि वसन सुरंग ।
मोहैं मनसिज रति लखि सखिन को अंग ॥
सिय वदन विलोकि लाल भये मन दंग ।
सिय रसिक अली के हिये यही रस रंग ॥२४८

हिंडोरे कसकत काम करोर ।
लखुरी सखी यह शोभा अद्भुत बाढ़त रंग झकोर ॥
तिरहुति नाथ सुता सन्मुख लै राजिव नैनन जोर ।
रसिक शिरोमणि श्री रघुनन्दन झूलत अवध किशोर ॥
श्री प्रसाद श्री चारुशिला जू भुज अंशन दुहुँ ओर ।
अपर समाज चहू दिशि राजत छाई मृदंग टकोर ॥
नाचति गान करति पिक वैनी घन दामिनि लखि मोर ।
युगल चन्द आनन्द अमी हित निरखत अग्र चकोर ॥२४९

हो जि धीरा २ झूलो लाड़िली डरैछे ।
अंग उछरै छै मोति लर लरुकि परैछे ॥

अति सुकुमार भार योवन को मृगनैनी चोंकि परैछे।
जन रघुनन्द सिया पिया छबि पर पलकों सो पवन करैछे ॥२५०

दै गलबांही झुलैं दोउ आज।
सरयू तीर तमाल कुन्ज में जनक लली रघुराज ॥
काह कहूं सखि कहत बनैना कोटिन सुख के साज।
मधुर अली सब तजि संग झुलिहौं छाँड़ि लोककुल लाज॥२५१

धीरा झूलो जि धीरा झूलो।
मोरि छतिया धरकि काँइ हूलो ॥
बार छूटिगै हार टूटिगै गिरिगे अंग दुकूलो ॥
राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकता सम तूलो।
कृपा निवासी कहत छबीली छैला मया जनि भूलो ॥२५२

झूलावत राम रसिक पटरानी।
नेह नाह को निरखि नागरी नैनन में मुसुकानी ॥
कर गहि डोर चकोर दृगन करि चितवनि चन्द लुभानी।
कृपा निवास विलासनि प्यारी प्रीतम को रस दानी ॥२५३

तेरी बांकी झुलनि पर वारि रे।
झूलनि जोर हिया विच कसकत मानहु हूल कटारि रे ॥
नैन कटाक्ष बान धनु भृकुटी जुलुफन जाल सुधारि रे।
कृपा निवास दाशि चरणन की रहिगई ठाढ़ि की ठाढ़िरे॥२५४

ललित ललि लाल अलि झूलने झूलही।
सरयु सरि तीर मनि महल मोहन मदन मध्य परिकर-

निकर सुकर रुचि हूल ही ॥
युगल उत्साह चित चाह पंकज कली सुरितु रवि निरखि-
हिय हर्ष फबि फूल ही ।
गान तर तान रसखान दश दिशि श्रवण सुनि सुधुनि-
युग्म सखि विकी विन मूलहि ॥२५५॥

सरयू झूले बना रहे सावन ।
पिय प्यारी नित झुला झुलै अलिगन झमकि झुलावन ॥
घन गरजनि चमकन दामिनि की मोरवा बोल सुहावन ।
बाजहि बीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ॥
छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहु दिशि चँवर डुरावन ।
मन्द हँसन चितवन रस बोलन नैननि शैन चलावन ॥
अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन ।
भूषण वसन अंग अरुझावन भुज से भुज लपटावन ॥
गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन ।
रस माला तृण तोरि अशीषत राइ लोन उतारन ॥२५६

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़ै उतसाह नया ।
जियो युग २ प्रिया प्रीतम यहि है चाह नया ॥
लता बितान वन प्रमोद तीर सरयू के ।
हिडोला अति विचित्र मनिन मय तयार नया ॥
अनेक यन्त्र बाजते मृदंग बीणादिक ।
अलापती हैं गान कला सजे साज नया ॥

यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन के ।
बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुख चाँद नया ॥
यही अभिलाष कान्ती लता श्री सिया जू की ।
बढ़ै दिन दिन सदा सनेह सुख सुहाग नया ॥२५७

हिंडोले झूलैं श्री जानकि जान ।
युगल प्रकाश कुञ्ज कुञ्जन में विपिन प्रमोद लतान ॥
स्याम बदन पर जुल्फैं छोड़ै मन्द मन्द मुसुकान ।
प्यारी सँग समाज अली गन लेत नई नइ तान ।
युगल प्रिया वारत तन मन धन करत निछावरि प्रान ॥२५८

झूलैं प्यारी झुलावैं प्यारो ॥
मधुर मधुर करकञ्ज मंजु गहि रेशम रजु सुकुमारो ।
नैनन निरखि नवेली बिधु मुख मन्द हँसनि तृप वारो ॥
अरुझि रहे अँग अँग परसपर सरुजनि अगम निहारो ।
युगल अनन्य अली झूलन लखि तन मन सरबश वारों ॥२५९

नवल हिंडोलना सखि झूलत दशरथ लाल ।
गरजि घन कोकिला बोलहि उमगि आनन्द माल ॥
सखा नुज सब नवल सुन्दर कीन्ह नवल शृँगार ।
झूलि नवल हिंडोलना सखि लाज कोटिन मार ॥
पवनमन्द सुगन्ध सीतल नील घन चढ़ि आय ।
लसत दामिनि झूलते जब युगल पट फहराय ॥
सुमन वर्षहिं देव हर्षहिं किन्नरी बहु गाय ॥

रामचरन समस्त देखहिं अवधपुर जनु धाय ॥२६०

चलो सखी देघन जइये, राघो जि रचो है हिंडोल ।
हेम रतन मय रचो है हिडोला हमहूं झूल झुलैये ॥
रघुनन्दन छबि जनकनन्दनी निरखि नयन फल पैये ।
गाउब नाचि बचाय भलीविधि स्यामा स्याम रिझैये ॥
सावन के अनुहरित सुहावन सुभग शृँगार बनैये ।
यूथ २ मिलि चलि हैं सुलोचनि लली लाल मन भइये ॥
अति सुन्दर बन बनो हिलोला बहु बसन्त छबि छइये ।
रामचरण लखि सिय रघुबर छवि रति पति कोटि लजइये॥२६१

झूलत नृपति किशोर किशोरी ।
विपिन अशोक सुभग सरयू तट हरित भूमि चहुँ ओरी ॥
मध्य महामण्डप झूलन को मणि मय सुभग बन्योरी ।
तामधि झूलत प्रीतम प्यारी संग सखी गन क्रोरी ॥
प्रीतम चारुशिला दिशि राजत श्रीप्रसाद सिय ओरी ।
शान शृँगार सजे नव नागर नागरि रंग भरोरी ॥
सन्मुख श्री मैथिली इशारे लीला सखिन कियोरी ।
कमला चन्द्र कलादि रँगीली वीण मृदंग सज्योरी ॥
कोउ गावति कोउ नृत्यति थिरकत राग मलार सुहोरी ।
अति आनन्द उमंग तरंगन मान दास सुख सोरी ॥२६२

झूलत सिया वल्लभ लाल ।
लाल कंचन सम्भ सुन्दर ललित डाड़ी लाल ॥

लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सुलाल ।
लाल दोउ के बदन शोभा अधर बीरी लाल ॥
लाल सखिया लाल गावति सब झुलावैं लाल ।
मोर हंस चकोर कोकिल भनत वानी लाल ॥
लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब बाल ॥
झुलत झुलावत औसरिन सों परस्पर सब बाल ।
कृपा निवास सुलाल लोरी निरखि नैन निहाल ॥२६३
चलो देखैं सिया रघुबीर झुलनवाँ झूलि रहे ।
रहि २ झौंका देत अलीगन उड़त सुरँग रँग चीर ॥
झौंकनि में अलकैं झुकि झूमत मनहु भँवर की भीर ॥
मन मृग मोहनि को वेधत है तकनि तीर वेपीर ॥२६४
झूलत सिय पिय महल अटारी ।
नव रंग मणिमय बंगला सुन्दर सुन्दर मोति झब्बाझालर ॥
रतन जड़ित अति ललित हिंडोला रतन रचित चहुदिशि फुलवाई।
मधुर २ गरजत घन वर्षत चम चम चम चम चपला चमकत॥
सुनि २ बोलत मोर मोरि मुख वचन कहति सखि प्रीतम प्यारी।
झुकि २ झूमि झुलावति गावत पिय प्यारी उर मोद बढ़ावत॥
तान लेत नइ २ अलवेली चलत पवन मृदु अति सुखकारी ।
अति नव देह भरे उर रसिया दिय गलबाहि करत रस वतिया॥
सरसत सुख उमगत दोउ अलियां तन मन छवि छकि रहिन सम्हारी ।

श्री प्रेमअली लखि तन मन वारति हुलसि २ हिय विधि
से मनावति ।
सावन सुख सरसाधन सब दिन निरखत रहुँ छवि युगल-
विहारी ॥२६५

श्रावणी पद-राखी बाँधत राम लखन कर ।
वामदेव वशिष्ठ मुनि जन मिलि दशरथ नृप के भीर भई घर।
विप्र मुदित मन करत वेद धुनि बरषत पुष्प देव अम्बर झर ।
ऊमर दीर्घ अरोग सम्पदा देहि अशीश सकल नारी नर ॥
भूप भण्डार मुक्त करि दीन्हें लै लै चले दक्षिणा भर भर ।
अग्र सलोने ऐसइ नित प्रति सदा विराजो सुख निधि रघुबर।२६६

ब्यारू पद-चले दोउ ब्यारू कुँज अली ।
करि विहार झूला के दम्पति रघुबर जनक लली ॥
रतन जड़ित शिबिका अति सुन्दर तापर लाल लली ।
चहुँ दिशि सखियन सौज लिये हैं नाना रंग रली ॥
पहुँचे ब्यारी कुंज सुभग जहाँ मध्य सुरतन थली ।
करि सन्मान सखी कुंजेश्वरी आनन्द भरि उछली ॥
बैठाई रतनन चौकी पर पूजन करि सुभली ।
नाना बिञ्जन कनक थार में अग्र धरी रसली ॥२६७

सखी सब शैन भोग लै आई ।
मेवा मिश्री दूध मलाई और अनेक मिठाई ॥
सुरभी सुत विंजन बहुतेरे थारन भरी सुहाई ।

पान पदारथ शुचि सुगन्ध मय बहु औषधन मिलाई ॥
पावत तुष्ट पुष्ट होइ जावैं रास जनित श्रम हाई ।
चपकन में भरि धरि आगे मैं दम्पति के मन भाई ॥
पावन लगे रसिक दोउ प्यारे करि २ बिजन बड़ाई ।
हँसत हँसावति सखिन पवावति वातन बिरमाई ॥
करि भोजन अचवन पुनि करि कै पान पाइ मुसुकाई ।
शैन आरती अग्र करी जब पौढ़े पलंग सुहाई ॥२६८

ब्यारू करत युगल रस भीने ।
रचि २ बिंजन सखिया परोषै बहुत प्रकार नाम को गीने ।
हँसि हँसि पावत हैं पिय प्यारी रूप माधुरी सखि चित दीने ॥
प्यारे निजकर कमल कवल लौं प्यारी मुख में देत प्रबीने ।
तैसहि प्यारी नेत्र पिय सुख में ग्रास पवावति अति मधुरीने ॥
मिसरी बहुत सुगन्ध मिले जो दूध पवावति सखि कर लीने ॥
करि ब्यारी अँचवाय सखी सब पान पवाय सुगन्ध भरीने ।
दै गलवांह प्रेम रँग भीने शैन कुंज सुख अग्र नवीने ॥२६९

शयन

बैठे सुखपाल लाल आवत महल मैं ।
आगे २ भीर भारी पाछे असवार सारी तहाँ मध्य रघुवर-
मदन महल में ॥
चुनि २ कलियां में सेज बनायो चोवा चन्दन छिरको चहलमें ।

पौढ़े दशरथ राजकुंवर वर अग्रअली निज दासि टहलमें ॥२७०

पौढ़िये रसिक जानकी रमन।

सर्व ऋतु के भोग यामें महल अति मन हरन ॥
विविध रचना बनी जहँ जहँ बिधि निपुणता हँसन।
सेज रचना बनत कहि नहिं मनहुँ मन सिज भवन ॥
पिया प्यारी ताहि ऊपर केलि कर सुख सदन।
यहई आशा अग्र सखियन सुफल कुरु ललि ललन ॥२७१

जानकि बल्लभ लालकी सखि आरति कीजै।
सुन्दर वदन बिलोकि के नैनन फल लीजै ॥
कुण्डल ललित कपोलना श्रुति अलक बिराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावना गज मुक्ता राजै ॥
पाग बनी जर तार की दुपटा जर तारी।
पटुका है पचरंग की मनि जरित किनारी ॥
सिया जुकि सोहै लाली चूनरी जरि जरित क्रिनारी।
रसिक अली की स्वामिनी अद्भुत छबि भारी ॥२७२

सुख सेज पौढ़िये राम सीता रमण।

राग रंग सुरुचिर शौरभ सौज विटिका चित्र चँदवा बिबिध-सुन्दर भवन ॥
रूप शुठि गुण कोक विद्या कुशल रचना वचन विदुष सुपिया-पारस गवन।
जनकजा राजीव नैन सुमैन छवी लखि अग्र सहचरि जान-

श्री मिथिलेश किशोरी सेवा जब २ यहि जग आऊँ ॥
अतर फुलेल अरगजा सुन्दर पिय प्यारी उबटाऊँ।
प्रीतम से नित लाड़ लड़ाऊँ टहलुनि ह्वै अपनाऊँ ॥
वीरी सरस लगाय खवाऊँ रस के वैन सुनाऊँ।
स्याम सखे दरबार रहूंगी जूठनि आस धराऊँ ॥२७६ख॥

चहियत कृपा लली सीता की।
नवधा भक्ति ज्ञान का करना मिट गइ शंक वेद गीता की ॥
पट मत वेद पुरान पुकारत करत बाद नर बपु बीता की।
झगरो करै अरुझै सुरझै नहिं मिटत न एक द्वैत भीता की॥
जाकी ओर तनक हँसि हेरत करत सहाय राम जी ताकी।
अग्रअली भजु जनकनन्दनी पाप भण्डार ताप रीता की॥२८०

दोहा–आँखहि देखत जगत को आँख बिना नहिं कोय।
अन्तर बाहर सब जगह मित्र आँख ही होय ॥२८१

* श्रीमती सर्वेश्वरी श्री चारुशीला स्तुतिः *

जयति चारुशीला चरण शरण मोद भरण पुंज।
अरुण वरण कमल रज पराग रस भ्रमर गुंज ॥
सुजन हृदय बास करण सकल शोक ताप हरण।
जनम मरण नसत रूप नवल धार रहन कुंज ॥
श्री जानकी रमण बिहार मिलत कृपा ते उदार।
बिना चारुशीला कृपा रस कि रीति नहि मिलंजु॥
श्री सर्वेश्वरि हमारि स्वामिनि बलिहारि जात।

अलि विहारिणी तिहारि कोर कृपा की करंजु ॥२८२

झाँकी पद

आज राम जानकी कृपालु सुन्दर सोहै।
निरखत सुर नर वर मुनि शिव बिरंचि मोहै॥
राम जी के शीश क्रीट रत्न जटित धारी।
सिया जी के शीश फूल कोटि चन्द्र वारी॥
रामजी के पीताम्बर धनुषबाण राजै।
सिया जी के कर कमल मुद्रिका बिराजै॥
राम जी के कुण्डल की काम कोटि शोभा।
सिया जी के कर्णफूल राम को मन लोभा॥
राम जि के उर सोहै मोतियन की माला।
चारु हार रुचिर पहिरि जनक कुवरि बाला॥
रामजि के कटि किंकिणि झुनुक झुनुक बाजै।
सिया जी के क्षुद्र घंटि मदन मन्त्र लाजै॥
रामजि घनस्याम वर्ण छबि के अभिरामा।
सिया गौर कनक वर्ण लाजत सत कामा॥
सिया जी की नख शिख छबि कहत नही आवे।
कोटि शेष सारद श्रुति पार हू न पावै॥
यही ध्यान हिय में रहत टरत नाहि टारयो।
अग्र युगल चरण ऊपर बारि फेरि डारयो॥२८३

देखो २ सिय पिय सँग राजत चारुशिला सुकुमारी।
शिर अर्धचन्द्र सिन्दूर, बर बिन्दू छबि भरपूर,
लखि रति मान भयो अति दूर सारी नील रँग जरतारी॥
झुकि रही चन्द्रिका नीकी, मुसुक्यान मन्द सुख जीकी,
है प्राणप्रिया सिय पी की, मिथिला शत्रुजीत नृप बारी॥
हगकोर कृपारस भीनी कर नील पद्मबर लीन्ही,
सर्वेश्वरि 'अलि' सुख दीनी, विहरत कनकभवन सुखकारी॥२८४

देखो माई नवल कुँवर दशरथ को।
मणिमय जटित क्रीट अति सुन्दर गोरोचन को टीको।
अम्बुज नयन नाशिका सुन्दर कुण्डल झलकत नीको॥
मणिमय जड़ित हार अति सुन्दर हीरा माणिक नीको।
कलित ललित जरकसि को जामा आभूषण पुष्पन को॥
उर सोहै मोतियन की माला भृगु लच्छन छबि नीको।
कर कंकन बाजूबंध सोहै धनुष बिराजत नीको॥
कटि तूणीर बाणकर राजै कमल फिरावत नीको।
अग्रदाश भजु दशरथ नन्दन मोहन मन सबही को॥२८५

हम चाकर रघुनाथ कुँवर के।
यम के दूत निकट नहि आवत द्वादश तिलक देखि रघुवरके॥
हौं अयाच्ययाचौ नहि काहुहि आश्रित रहौं नही सुर नरके।
एकै आश और नहिं ध्यावौं पायक भयो रावरे घर के॥
लीन्हौ शैल सम्हारि नाम को लोक वेद सौ निजकर तरके।

सुर नर मुनि इन्द्रादि देवता नाहिन और रावरे वर के ॥
अधम उधार लियो जन आपन सुनि सत बचन श्रवण सत गुरु के।
अग्र सुदास पटा लिखि पायो दसखत दशरथ सुतके करके॥२८६

राग जैतिश्री—यह मोहि दीजै राघव राम।
दासन दास दास को अनुचर कथा श्रवण मुखनाम ॥
मोक्ष आदि दै चार पदारथ मेरो नाहिन काम।
चरण रेणु साधुन की शिर पर कृपा करो सुख धाम ॥
सन्तनसों अनुराग निरन्तर इह विधि बीतौ याम।
अग्रदास चाहत हरि चरचा सुधा सिन्धु विश्राम ॥२८७

बिलावल-सरयू सरिता राज सबनते पुरी शिरोमणि रामपुरी।
वेदन हूं बहु भेदन गाई महिमा जाकी अघट धरी ॥
शिव विरंचि सनकादिक नारद जपत व्यास जेहि घरी२।
नाम उचार होत अघ न्यारे जीवन दुरमति दूर टरी ॥
जो कोउ बसत अयोध्या माही समसर ताहि न जात करी।
सूकर कूकर सबै विष्णु पद आवत जात न अटक घरी ॥
जन्म भूमि राघो की प्यारी भुक्ति मुक्ति जँह गरी गरी।
अग्र अहै को जो नहिं बाँछत बसत जहाँ सर्वदा हरी ॥२८८

सब तजि अवधपुरी रहिये।
राम रूप हिय राम नाम मुख करि सेवा गहिये ॥
मज्जन पान सदा सर्यू को सम सुख दुःख सहिये।

जहँ तहँ राम चरित सुनिये नित सहजहि सुख लहिये ॥
श्रीराम चरन रघुनाथ कृपाते नहि कछु फल चहिये ॥२८६

राग इमन चौतारो-करत दोउ अरस परस शृँगार ।
गौर वरन तन राजकुमारी साँवल राजकुमार ॥
धरत चन्द्रिका क्रीट शिरन पर पहिरावत उरहार ।
अँखियन में अँजन आँजत जनु शान धरत शर मार ॥
नकवेशर मोती जु सम्हारत दरपन बदन निहार ।
राम सखे वा युगल रूप पर बार २ बलिहार ॥२६०

राजत दम्पति कनक भवन मधि रघुवर जनक दुलारी ।
भूषण बसन परस्पर सजि अँग लखत मुकुर कर धारी ॥
चपलासी चहुँ ओर सहचरी सेवित नव सुकुमारी ।
रसिकअली तहँ रस भरि तानन गान करति गुन वारी ॥२६१

बशो मेरे नैनन में सियाराम ।
कल्पबेलि श्री जनकनन्दनी रघुनन्दन घनश्याम ॥
राजत रतन जड़ित सिंहासन जुगल जोड़ि अभिराम ।
अग्र अली निरखत यह शोभा वारत कोटिन कांम ॥२६२

युगल छबि आज अनूप बनी ।
कनक भवन शृँगार कुंज में गैठे बनी ठनी ॥
कोटिन सखि सहचरी अमित लिये ठाड़ी सौज घनी ।
रसिक अली उर यहि समाज बशो लीला ललित मनी ॥२६३

कैसी जोड़ी बनी मन भावनियाँ ।

इधर तौ क्रीट ओ कुण्डल कि द्युति अनोखी है ॥
उधर भी चन्द्रिका चित्त चोरने में चोखी है ।
वो रोरि दिये हैं भाल ये खौर केशर की ॥
इधर है नाशा मणि लटकि बाँह बेशर की ।
तारर मुसुकन अमी बरषावनियाँ ॥कै०॥
रहन चलन हर एक बांकापन निराला है ।
बहम बिलोक कसाकस भि क्याहि आला हैं ॥
अनूप रूप है शोभा मनोहर ओ सुख धाम ।
(कि) जिन को देखि कै लज्जित हो जल गया खुद काम ॥
दोउ चितवनि कि कहर मचावनियाँ ॥कैसी०॥
जबां सो कैसे हो वयाँ ये "रामजन" सुखमा ।
(कि) तीनों लोक में जिनकी कहीं नहीं उपमा ॥
ये जी में आता है कि बश देखुँ इनकी सूरत कों।
उठा के धरलुँ हिये बीच दोनु मूरत को ॥
भूलै कबहुँ न छबि ललचावनियाँ ॥कैसी०॥२६४

क्या खूब बनी है झाँकी मनमोहन राम सिया की ।
दोउ बैठे रतन सिंहासन कर सोहै कमल सरासन यह सरबस जनक धिया की ॥
दोउ मूरति परम मनोहर शिव जी के अचल धरोहर । यह सम्पति हम सखियाँ की ॥
लखि राम सिया की जोरी रति पति की मति भइ भोरी ।

मिलि गये रतन अखियां की ॥
लखि रूप अनूप सुहावन भइ नेह लता अति धनधन।
क्या कहूं छटा छबि याकी ॥२६५

हो दोउ चन्दा बशो हिय मेरे—
सिय प्यारी श्री दशरथनन्दन अरुण कमल कर कमलन फेरे।
बैठे सुर तरु तर सिंहासन आस पाश ललना गन घेरे ॥
गरभुज माल परस्पर अरुझे चारुशिला मुख हँसि २ हेरे।
श्रीप्रसाद सखि पान पवावति छत्र चँवर कर अलिगन घेरे ॥
बीण मृदंग साज युत कोऊ अलि गान करति शौन्दर्य सुहेरे॥२६६

प्यारी तिहारी चन्द्रानन पर प्रीतम नैन चकोर कियेरी।
एक पलक टारन नहिं चाहत जोहत हैं भुज अंक लियेरी ॥
तृप्ति न मानत कबहुँ रसिक वर रूप सुधा रस पान कियेरी।
धनि२ भाग सुहागिनि तेरो धनि यह सुख सरसात हियेरी ॥
सियाअली यह स्वाद महारस तेरे कृपा बिन कौन पियेरी॥२६७

पगे रहो दोऊ निज प्यारन में।
अरुझि रहो सुरझो कबहूँ ना अरुझाओ हम कोऊ ॥
अधर सुधारस पीवो पिवावो टुक जूठन मोहि देऊ।
सियाअली मम प्राण के सरबश प्यार हमार भिलेऊ ॥२६८

गोरे से वदन पर स्याम बिन्दुलिया।
मानहु अलि छौना पंकज पर बैठोहै आय लगै छवि भलिया॥
तापर झीन नील सारी तन चमकत जनु घन मांझ विजुलिया।

मोहनि पिय मन आय फँस्यो है लखि सिय की मुसुक्यान-
रँगिलिया ॥२९९

सियजू रानिन में महारानी । और सबै रौतानी ॥
चितवत भौंह खड़ी कर जोरे इन्द्राणी ब्रह्माणी,
गौरा रचि २ पान लगावति, रमा खवावति आनी ॥
अठौ सिद्धि खड़ी कर जोरे नवनिधि मनहु बिकानी ।
कोटिन ब्रह्माण्डन की प्रभुता रोम रोम अरुझानी ॥
जो माया एकै घाटे पर सबहि पिवावत पानी ।
सोउ चाहत जाकी करुणा को बार बार सनमानी ॥
जाबिन पातौ हिलि न सकत जो सब घट माँह समानी ।
संत जनन की इष्ट देवता राम प्रिया जग जानी ॥३००

हमारी स्वामिनी वो हैं जो सब रानिन में महारानी ।
सदा सेवैं जिन्हें सुरनारिनी निज कारिनी जानी ॥
धनद की छत्र लै छाजै झलैं मुर्छल वरुन वाली ।
लिये वीणा सभा में जिनके गुन गावत हैं ब्रह्माणी ॥
रमाबीरी खवावत हैं उमा लै इत्र कर लेपै ।
करैं रति हर्ष युत जिन्हके जरी जूती कि सेवकानी ॥
कहै हरिजन कहां तक है विदित सब श्रुति पुराणों में ।
सकल ब्रह्माण्ड की नायक यही हैं एक सुभदानी ॥३०१

सिया जु के अरुणारे दोउ तरवा । मनो अनुरागिन के घरवा ॥
क्या गुलाब क्या कमल कटीलो क्या बड़ लाल अनरवा ।

क्या कुसुम जल बिन्दु परत ही बिगरत रँग निचरवा ॥
क्या मखमल क्या सिरस कलँगी क्या मालती पतरवा ।
इनके कोमलता के आगे क्या कपोत वट परवा ॥
उरध पदुम कल्पतरु अंकुश रेखन के उजियरवा ।
एक एक रेखन पर वारों त्रिभुवन को शृंगरवा ॥
जिनके धोवत डरत देवता जनु चुइ परत इतरवा ।
इनसे लगन नही तो वृथा दण्ड कमण्डलु करवा ॥३०२

सिय जू तिहारो चरन । सुर नर मुनि सब करत बन्दन ॥
तव पद पदुम सुमंगल करन । तेहि तजि जाय नहिं जिया की जरन ॥
यद्यपि अधम सब औगुन भवन ।
तदपि भरोषो तेरो करन भरन ॥
तव नाम अनुपम दुष्टन दलन ।
देत निज भक्ति सिया राम के चरन ॥
द्रवहु दया मयि तुव रामेश्वर जन ।
अब जनि करु देरि राखिले शरन ॥३०३

राम चरण चिन्तामणि सुर तरु ।
पारस कोटि कल्याण धेनु वर ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि कोटि मुकुतधर ।
दीपक दिन मणि कोटि तिमिर हर ॥
कोटि ताप उपसमन है हिमकर ।

कोटिक कमल विमल कोमल पर ॥
क्षमा कोटि अपराध छिति धर ।
आतपत्र व्यापक जन अम्बर ॥
संजीवनि कोटिन मोचन गर ।
कोटि पियूष शुभग सरिता सर ॥
दन्ती विघ्न विदार सिंह नर ।
काल व्याल कों कोटि खगेश्वर ।
दोष तूल पाखण्ड ढेर घर ।
हुत भुक कोटि दुसह जारन जर ॥
काम क्रोध लोभादिक तसकर ।
नीति कोटि अनुसरन दण्डधर ॥
सुख समूह सरनागत पञ्जर ।
कृपा सिन्धु पद अग्र वारि चर ॥३०४

ये छवि पर वारों अमित वर चन्दा ।
स्याम गौर भुज अंश दिये हैं लसत सखी सुख कन्दा ॥
हँसत मन्द बतरात परस्पर चितवनि में जनु फन्दा ।
रूप रसिक रस छके युगल मिलि ज्यों मधुकर मकरन्दा ।
अग्रअली के प्राण जीवन धन जनक लली रघुनन्दा ॥३०५

हमारे सीताराम अधार ।
जन्म अनेक गति अनन्य पद मन वच क्रम निर्धार ॥
उभकों नही द्वार काहू का बड़ो भल दशरथ दरबार ।

शंक नही परलोक लोक की सब रघुपति आधार ॥
औरहि कुछ जानों नहि मानों सुर नर असुर अपार ।
अग्रदास आलम्बन दृढ़ व्रत वैदेही भरतार ॥३०६

हम हैं हरि जू के चौधरिया ।
हमरो नेम और नहि याचै चरण कमल रज परिया ॥
काहू के अश्व गज रथ द्वारे नव निधि भरे भण्डरिया ।
हमरे निधि सिया राम नाम की भाल तिलक शिर धरिया ॥
काहू को वैराग योग बल ज्ञान भक्ति षट किरिया ।
अग्रदास मन वचन कर्म पथ श्री गुरु पद अनुसरिया ॥३०७

जो मेरो अवगुण उर धारो ।
तो मिथिलेश नन्दनी स्वामिनि कोटि कल्प नहि मोर उबारो॥
कौन सो क्रिया कीन्ह में नाहिन यह संसार असार पनारो ।
वेद विदित यह विरद तिहारो सीसी सिसकत नाम बिचारो॥
जो ब्रह्माण्ड कोटि के नायक प्रीतम राम स्याम छवि वारो ।
तव बस रहत सदा पिय नायक रसिक सिरोमणि छबि मतवारो ॥
यह जिय देखि पेखि प्रभुता निज नाते मिथिला ओर निहारो ।
करुणा सिन्धु शील गुण सीमा दाशी युगल प्रिया न विसारो॥३०८

शारद विधुचय बिजित बरानन बिधुकर निकर सुहाशम् ।
मदन चाप जित भृकुटि कुटिल तिल सुमन मुक्त धृत नाशम् ॥
चारु जिबुक दर ग्रीव मनोहर स्वधर विम्ब प्रति भाषम् ।

मुकुर कपोल चिकुर चय चुम्बित नयन सरोज विलासम् ॥
जनक सुता कर धृत पर नृत्यत ललित कण्ठ कृत गातम् ।
पद नूपुर रव रंजित दश दिशि उचरित ताल प्रमाणम् ॥
पश्य मुदा रघुनन्दन मतिशय चित्त चमत्कृत वेषम् ।
जनक सुता रंजित रति पति मद गंजन मंग मशेषम् ॥
रसिक भनित सीता पति गीतं ललित पदावति नीतम् ।
सज्जन श्रुति सुखप्रद मिदमद्भुत मंचित लाल विनीतम् ॥३०९

यह प्यारी छबि पर बारियां ।
स्याम गौर सुन्दर मन भावन सोइ हिये बिच धारियाँ ॥
जनकलली रघुनन्दन दोऊ और सखी सँग सारियां ।
रसिकअली के यह मन भावत और लगै सब खारियां ॥३१०

बलिहारी युगल किशोर की ।
दशरथ सुत श्री जनक नदन्नी सुख सुखमा शिरमौर की ॥
अद्भुत शोभा निरखि परस्पर चितवत चित्त रसबोर की ।
रसिकअली बारज तन मन धन घन दामिनि मन मोर की ॥

क्या सान चाल अलवेला गज लाज रहे मस्ते मस्ते ।
जिन देखा तिन के चित्त रतन अनमोल बिके सस्ते सस्ते ॥
रस रूप माधुरी टपक रही सखि ? जात रहे रस्ते रस्ते ।
रघुराज लला नृपनन्दन ने मन छीन लिया हँसते हँसते ॥३११

पिय प्यारे के नैना, बड़े बांके ।
चितवत ही घायल करि डारत पुरत न घाव मलम्ह टाँके ।

पल परत न चैना ।।ब०।।
छीन लेत कुल कानि छिनक में मारत मनहु मदन डाँके।
सर बश हरि लीना ।।ब०।।
मद माते रसिकन रस राते छबि छाके नहिं उपमा के।
मोहन मन मैना ।।ब०।।
जेहि मन 'मौन' लगै सोइ जानै मृदु मुसुकान झमकि झांके।
यह कासे कहूं बैना ।।बड़े०।।३१२ क।।

मोहनि मूरति प्यारी प्यार गसीरी ।
प्रीतम को मन करत खवासी प्रीति शृँगार रसी री ।।
चितवनि चेरी चपल चहूं दिशि लाड़ लड़ावत चाह बशीरी।
चौप चमर दुरि सुरति सराहति लग श्री लपटि लसी री ।।
पल बलिहारी दृग सनमानी पटरानी हुलसी री ।
कृपानिवास श्रीराम रसिक वश जब सिय तनक हँसीरी।।३१२ख

छबि अति बाँकि हमारे हिया बसि गई ।
तन घन स्याम लसत पीताम्बर जनु चमकन चपला की
लिपटि कटि कसि गई ।।
जिमि शशि ओर चकोर निरखि छबि बदन सुचन्द्र कला
कि रूप रसि फँसि गई ।।
अंग अंग अवलोकि मधुर छबि कोटि मदन सुखमा की
गरूरत खसि गई ।।
मौन मुदित छबि अवध छयल की झमकि झरोखन झाँकी

दृगन मग धसि गई ॥३१३

कल्याण-रघुबर बाँधे चुनरिया पाग ।
प्यारी की सारि चुनरिया सोहै जरी किनारी लाग ।
मोतिन मय शिरपेंच कलँगी शीश फूल दुति जाग ।
रसिकअली यह युगल माधुरी दरस करत बड़भाग ॥३१४

खम्माच-बशो मेरे नयनन में सिया लाल ।
चपला घन कंचन मरकत दुति राजिव नैन विशाल ॥
कोटि २ रति मदन विमोहन अद्भुत रूप रसाल ।
राजत कनक भवन में रसिक अलि संग रँगीली बाल ॥३१५

देखिकै अरुझान्यो जियरा ।
रामकुमार स्याम सुन्दर वर हमहिं नही सबही को हियरा ॥
बन प्रमोद विच जनकलली संग अली सकल जुरि आई नियरा।
युगल प्रिया यह छबि निरखन को हिय विच बारो सुरति को दियरा ॥३१६

हेरनि हँसनि हमारो हरोहिया ।
बदन सुचन्द मधुर विहँसनि में, जादू सा कछु डारो गजब किया।
नैन सरोज बान धनु भृकुटी, चितवति हिय हनि मारो कतल किया ।
बेदरदी घायल मोहि करिके, फिर हँसि कस न निहारो न मारो जिया ॥
नाम रूप नित धाम निरन्तर, गावत सुयश तिहारो शरन लिया।

रसिक चकोर चन्द्र छबि निरखै, रूप सुधारस प्यालो पिलाय दिया
कृपा सुदृष्टि सदा रसिकन पर, दै २ नैन इशारो जिलाय लिया।
मौन मुदित मन चरन कमल पर, तन मन सरबस वारो
अवध पिया ॥३१७

बिन देखे नयनवा ना मानै हो।
जब से लखि दृग माधुरि मूरति रूप सुधा रस चसकाने हो॥
मुख सरोज मकरन्द पान करि जन मधुकर मन मस्ताने हो।
जिमि शशि ओर चकोर विलोकत रूप सुधारस चसकाने हो।
अहह सुजान राम पिय तुम बिन कौन मौन मनकी जानैहो।३१८

अँखियन बिच तुमको चुराइ राखौं।
कोटि करो पिय जाने न दैहों हियरा से हियरा लगाई राखौं॥
मृदु मुसुकनि बांकी चितवनि में तन मन अपनो रंगाइ राखौं।
सियाअली के दोउ जीवन धन सब बिधि अपनो बनाइ
राखौं ॥३१६॥

तोहि राखौं पियरवा मैं केहि विधि से ॥
दृग बिच राखौं हिया तरसत है हिय बिच राखौं नयन तरसै।
एको विधि धीरज नहिं आवत प्यारे बतादो मिलो कैसे ॥
दृग से दृगन मिलाओ साँवरे हिय २ से मिलो गर गर से।
सियाअली यहि भाँति मिलो जब दर्द मिटे अँग२ परसे ॥३२०

कवित्त

वाम भजन कोउ शाक्त हुये स्मृत्ति ज्ञान में धंसे हुये।

कोइ निर्गुण ब्रह्म समझते हैं सुखमना साधना कसे हुये ॥
कोउ अजपा को जाप करैं निर्जन एकान्त में बसे हुये ।
जालिम हम हाय कहां जावैं तेरे जुल्फ जालमें फँसे हुये॥३२१

अँखिया राम रूप अनुरागी ।
श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥
सुन्दर बदन मदन सत शोभा निरखि निरखि रस पागी ।
रतन हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रँग रागी ॥३२२

अँखिया राम रूप रस भीनी ।
कोटि काम अभिराम स्याम घन निरखि भई लय लीनी ॥
लोक लाज कुल कानन मानत नूतन नेह रँगीनी ।
रतन हरी कैसे अव निकसे हो गइ ज्यों जल मीनी ॥३२३

फन्द में फँसा आनिकै मन मोर किसी का ।
उलझन है कठिन इस में है क्या जोर किसी का ॥
खो जाती है उर लाज सदन की चिन्ता यह ।
नव नेह का फल इसमें नहीं सोर किसी का ॥
संसार कि सुधि कैसे के रही जात सखी री ।
मिल जाय निराले में जो चित्तचोर किसी का ॥
में आज कदाचित जो किसी भाँति चली जाउ ।
फिर आके अबश दरस करूँ भोर किसी का ॥
हरिजन जो कहीं देखि परै रूप अनूपम् ।
सच है नहि टरता है दृगन कोर किसी का ॥३२४

जानकि रमण रसिक मनि रघुवर रघुकुल भूषण प्यारो ।
अति सुकुवार उदार ललित छबि मदन विमोहन हारो ॥
सरद विमल बिधु निन्दत मुख छबि अमित कला उजियारो।
रसिकअली पिय विहँसि बचन मृदु जनु बसि मन्त्र उचारो॥३२५
मन में बशी बस चाह यही प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
बिठलाके तुम्हें मन मन्दिर में मनमोहनि मूर्ति निहारा करूँ॥
भरिके दृगपात्र में प्रेमका जल पद पंकज नाथ पखारा करूं।
बन प्रेम पुजारि तुम्हारा प्रभू नित आरति भव्य उतारा करूँ॥
तुम आओ न आओ इहाँ तुमको निशिवासर ही में बुलाया करूँ
तेरे नाम की माला बनाऊँ सखे मन से मन को परकाया करू
तेरे प्रेमिजनों का मैं प्रेमी बनों तेरे चाहने वालों को चाहा करूँ।
जिस पंथ से आओगे आपप्रभो उस पंथ में पलक बिछाया करूँ।
तुम जान अयोग्य बिसारो मुझे पर मैं न तुम्हें बिसराया करूँ।
गुनगान करूँ नित ध्यान धरूँ तुम मान करो तो मनाया करूँ ॥३२६

आज इन दोउन पर बलि जैये ।
स्याम गउर गलबांह दिये हैं यह छबि दृगन वशैये ।
तिरछी तकनि हँसनि मृदु बोलनि लखि सुनि हिय हरषैये।
अग्रअली इन मृदु मूरति को हिय बिच कुंज वसैये ॥३२७
क्या बुलाक अधरना पर हलकै ।
जबते दृष्टि परी या मूरति तबते छिन पल परत न पलकै ॥

किधों आशम शर२ सन्धान्यो की सुसमा की सर वर झलकै।
सिया राम पिय मुख मयंक पर मनहु अमी की मूरति
झलकै ॥३२८

कवन सहै चितवनि की चोटैं।

करत विहाल ढाल नहि मानत गिनत नही कोटन की ओटैं ॥
अँग २ दँग अनंग रंग बशि घायल परी भूमि पर लोटैं।
सियाराम हिय वेधि नयन रस जान लिया जनपति के ढोटैं॥३२६

लगन लगी तब कौन करै डर।

सब शंशय मिटि जात अलीरी, बदन विलोक मीत अपनो कर।
बून्द अकाश पपीहा चाहत यद्यपि भरे अगमन सरिता सर।
करुणा भरे खरे घर वारे रोवत, सती चढै अपने सर॥
लोक लाज कुल कानि तबै लौ जबलौ प्रेम रशी न फँशी गर।
प्रेमसखी बलि झगड़ा कौन है, यह तन बेच्यो अवध छैलकर।३३०

घुँघुरारे वार जिया लिया रे।

देखत दिल दरम्यान दखल दिया, जादू सा कछु कियारे॥
पिय २ रटत अटत आरत है निशि दिन तलफत हिया रे।
सियाराम सस्मेर लगी उर घायल परी केति कन तियारे।३३१

तनिकै हँसि हेरैरी राजकुमार।

बुद्धि बौराय हिराय जाय मन, रहत न देह सम्हार॥
दूरिहि ते जाके तन ताके मदन भयो जरि छार।
सो त्रिपुरारि भिखारि भेष धरि अलख जगाई द्वार॥

सपनेहु निकट जाय नहिं कबहूं माया मोह विकार।
सो भुशुण्डि शिशु चरित बिलोकत फँसे प्रेम की जार ॥
सुनत बोल बिनु मोल बिकानी सारद सी हुशियार।
राम सहाय जाय सोइ जानै अवध नगर की बजार ॥३३२

श्री जानकी जीवन बिना जीना न काम है।
षट रस प्रकार चार का खाना हराम है ॥
दश आठ औ नौ चार षट बकना तमाम है।
तन धाम धन धरणी जगत यमलोक धाम है ॥
करि के करार क्या किया मन में न स्याम है।
आखिर गुलाम चाम का विधि कर्म वाम है ॥
जीवन यतन इस जीव को श्रीराम नाम है।
ज्ञाना अली क्षण पल सदा जय आठ याम है ॥३३३

श्रीराम बधाई उत्सव

आशावरी-आज बधायो दशरथ रायकै जायो राजिव नैन।
आये सुख के ऐन ॥

चैत मास नौमी उजियारी यह संयोग अनूप।
लगन महूरत वार नखत ग्रह चरन चिन्ह बड़ भूप ॥
वशिष्ठ आदि तपोधन धारी कीन्हो यह निरधार।
दुष्टनि दुखद सुखद सन्तन को भूमि उतारण भार ॥
घर २ तोरण धुजा पताका मुक्ता बन्दन वार।

दूध पूत भरि नारि सुहागिनि साथिये लिखती द्वार ॥
चन्दन चौक रचित आगन में दधि अरु दूब वधावै ।
कनक थार सीपज भरि अक्षत मिलि सँग मंगल गावै ॥
भू देवन कहँ भूमि बाजि गज धेनु रतन रथ देहि ।
पाँइ लाग समदात नरेश्वर मुदित आशिषा लेहि॥
पँणव निशान मृदंग शंख धुनि जै २ शब्द उचार।
कौतूहल कौशलपुर वासी आनन्द बढ्यो अपार ॥
मागध सुत भाट बन्दीजन दान मान बड़ पावै ।
वर्णाश्रम अन्त्यज जे तन धरि फूले अंग न मावैं ॥
नृत्य गान वा जन्त्र वेद धुनि ठौर २ वह भनिये ।
लेहु २ यह कहत नगर में और श्रवन नहिं सुनिये॥
सुर तरु काम धेनु चिन्तामणि कौशल्या सुत जायो ।
अग्रदास रघुपति के आनन्द में वांछित फल पायो ॥३३४
रागआसावरी-देखि द्वार भूप दशरथ के शोभा कहत न आवैरी।
मूरति वन्त मुक्ति सिधि ठाढ़ी भीतर जात लजावै री ॥
मनिमय अजिर अनूप देखि छवि झाँकि लेउँ सुत छावैरी ।
कोटि काम शशि कोटि भानु दुति अमित तेज तन धारैरी।
घुंघर वारे केश वदन पर चंचल अधिक सुहावे री ॥
मनहु कलप तरु तेज तनक अलि मधुर सुधा मदमातेरी ।
उज्वल भाल सुचक्षण ऊपर श्याम सुभग तन सोहै री ॥
बरणों कहा विशाल नैन अतिता उपमा कहुँ नाहीं री ।

इन्दु बदन पर उडुप रहैं दोउ लोल मीन की नाई री ॥
बगना कण्ठ बिराजत मानहु ऊपर सुभग निकाई री ।
दुतिया चन्द अनन्द जानि कै घन में देत दिखाई री ॥
अरुण पीत सित हरित कौंधनुई स्याम सुभग कटि सोहैरी।
जलद घटा पर मनहु प्रगट भये इन्द्रधनुष मन मोहे री ॥
कौशल्या की कूख कल्प तरु रामचन्द्र फल लागे री ।
पुण्य प्रभाव ते अगम अगोचर कौन सुकृत यह जागे री॥
शंकर शेष विरंचि शारदा जिन्ह स्वरूप नहिं जानै री ।
ताके गुण अलि अग्रदास कछु मति अनुमान बखानेरी ॥३३५

आसावरी- प्रगट भये दशरथ के रघुवर ।
महा महोत्सव मंगल घर घर ॥

देखो आजु अवधपुर शोभा, नर नारी आनँद उर गोभा ।
सुनत सबै आतुर होइ धावैं, हरित दूब दधि नृपति बँधावैं ॥
मोतिय चौक बधावो गावैं, नव तरुणा साथिया बनावैं ।
ध्वजा पताका मण्डित घर२, दिव्य दुकूल सुगन्ध सिंचिधर॥
घर अम्बर बाजैं बहु बाजें, मनहु महोदधि लहरी गाजे ।
विप्र वेद धुनि व्योमनि परसत, सुर संघट कुसुमनि अति वर्षत॥
भीर भूप घर अतिशै राजै, कोउ लेवै कोउ देवै काजै ।
भूमि बाजि गज विप्रन पाये, धेनु रतन अन बसन अघाये ॥
याचक जन याचन जो आये, दान मान वांछित फल पाये ॥

कहत सबै धन बचन हमारे, चिरँजीवो ये पुत्र पुम्हारे।
अग्र बधाई यह नित पावै, जन्म कर्म लीला गुन गावै ।।३३६

राम जन्म आनन्द बधाई।

सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि अवधपुरी मनो घर २ आई ।।
अन्तरिक्ष जन फिरत अवनि पर मिलत परस्पर दूब बधाई।
प्रफुलित हृदय नगर वासिन के वाल वृद्ध इक बात सुहाई ।।
भई भीर नाचैं नर नारी बाजे बहुत गने नहि जाई ।
सुर पुर आनन्द भयो सबनि मन हरषत देव पुहुप बरषाई ।।
मंगल कलस चौक मोतियन के द्वारन बन्दनवार बंधाई ।
शिशु को वदन निहारि नारि सब वारत भूषण लेत बलाई।।
रतन गर्भ कौशल्या रानी धन्यभाग की करत बड़ाई ।
दशरथ राय न्हाय भये ठाढ़े कनक वसन धन धेनु मगाई ।।
परम पुनीत विप्र पद वन्दत दान मान जनु घन वरषाई ।
मागध सूत भाट बन्दी जन अष्ट सिद्धि नवनिधि वांछितपाई।।
देत अशीश राय दशरथ को चिर जीवहु कोशल रघुराई ।
दशरथसुत हों नित प्रति देखों अग्रअली के यह जियभाई।।३३७क
राम जन्म रवि उदय जगत महँ तिहूं लोक को तिमिर नसावत।
लम्पट चोर२ निशाचर कुल बिन सबहिन को आनन्द वढ़ावत।।
दिन मनि राम सन्त सरसीरुह प्रफुलित हृदय बहुत सुख पावत ।
जातुधान संग सहस कुमुदनी तस्कर विटप समूल विलावत।।

पूरब दिशा कूखि कौशिल्या प्रगटि हंश कवि कीरति गावत।
दुष्टन को वृषराशि मिहरमानो अग्रभक्ति प्रगटि बरषावत॥३३७ख
ढाढ़ी पद । राग परज-तिहारो ढाढ़ी आयो हो रघुवंसी यजमान
जन्म २ ढाढ़ी या घर को मान सहित दे दान ॥
रवि अनरण्य इक्ष्वाकु अंग रघु धुंधुमार युवनाश ।
काकुथ सगर दिलीप भगीरथ गंगा अवनि प्रकाश ॥
हरि कीरति सम वंश विशद अति मोमति जाय न जान।
इक्षा सुत शारदा शेष सुर वेद पुरान बखान ॥
सुत जायो सुनि पंगतिरथ के मोमन रंग रली ।
उपजीवी अज भूप द्वार को वारी सुफल परी ॥
लछिमन भरत शत्रुहन सुन्दर नाम सकल गुन सार ।
धीर गम्भीर अभै करि तपसी अतिही शील उदार ॥
में पाई सन्तनि मुख ग्रन्थनि सुनहु नृपति दै कान ।
जन्म न देख्यौ रामचन्द्र सो भूत भविष वर्तमान ॥
वेद उधार कमठ करुणा कर धरणी धर त्रय नैन ।
हरष फरषधर, असुर विमोहन विंग बचन सुनि जैन ॥
ऋषि मष सन्त धर्म रखवारी कौशल्या सुत करिहैं ।
दुष्टदमन करि बाँधि बारिनिधि बिपति देव सब हरिहैं॥
भू कन रेणु बुन्द वर्षा की उडुगण गनि निरधार ।
गर्वित बचन सुनत ढाढ़ी को रघुपति गुणनि अपार ॥
धर्मसार श्रुतिसार शिरोमणि कान्ति अधिक तन तेज ।

चरण चिन्ह सर्वेश्वर के सब विधि मनु रच्यो बन्धेज ॥
ढाँढ़ी अग्रदास दशरथ गृह याचत बारम्बार ।
साधू संगति तव सुत कीरति परचो रहों नित द्वार ॥३३८

राग टोडी-आज दशा दशरथ नृप की अति रानी रतन खानि कुषि खूली ।
सुनत सुधा वरष्यो त्रिभुवन में सन्त कमल श्रेणी हृदि फूली॥
लछिमन भरत शत्रुहन सुन्दर प्रगटे राम सजीवन मूली ।
शिव विरंचि सुर शेष बीणाधर गुण गण गान शारदा भूली॥
अष्ट सिद्धि नव निद्ध मुक्ति चतुर्धा अवध के द्वार२ अनुकूली।
अग्रदास रघुनाथ जनमते मंगल अवर नहीं कोइ तूली॥३३९

राग गौरी-नृप दशरथ के पुत्र भये सुर पुर में बजत बधाईरी।
घर २ मंगल चार अवधपुर बन्दन वार बधाई री ॥
चतुर सखी मिलि साथियां दीन्हे विधि सो सीख भराई री ।
चन्दन चौक रचित आगन में रतन जड़ित अँगनाई री ॥
कृत कौतुक कौशलपुर बासी याचक अभर भराये री ।
अवधपुरी आनन्द भयो भर वांटत बहुत बधाई री ॥
अग्रदास रघुबर के जनमत मन वांछित फल पाई री ॥३४०

आसावरी-फूले फिरत अयोध्या वासी ।
सुन्दर सुत जायो कौशिल्या रामचन्द्र सुख रासी ॥
घर घर बन्दन माल साथियो मोतिन चौक पुराये ।
नाचत गावत देत बधाई मनु घर २ सुत जाये ॥

गली गली गज बाजि जहां तहँ हलका दिये तवेले ।
दान बहुत याचक जन थोरे कापै जात सकेले ॥
दशरथ भूप भण्डार मुकर किये बन्दी अभर भरे ।
सकट सोलि ताही सां हमला ढोये ढेर धरे ॥
सन्त कमल सुख देन काज रबि राघव उदै करयो ।
मुदित देव दुन्दुभी वजावत निश्चर तिमिर हरयो ॥
देत अशीश नगर नारी नर चिरँजीवो रघुवीर ।
अग्रदास आनन्द अखिलपुर मिटी ताप तन पीर ॥३४१

अवधपुर प्रगटे हैं रघुराज ।
आनंद भयो अखिल भुवननि में दुरे दुख द्वन्द समाज ।
निफल सफल भये द्रुम देखियत सब पय घृत सरिता बाढ़ी ।
त्रिबिध प्रकार समीर सु सचरत रिधि सिधि द्वारे ठाढ़ी ॥
घर २ मंगल चार बधाई वेद घोष ते बोलत ।
दधि अरु दूव बँधावत नृप को मुदित भये मुनि डोलत ॥
कहत परस्पर तत्त्व के वेत्ता यह सुत पुण्यन पायो ।
दिति सुत काल दयाल अदिति सुत सो दशरथ गृह आयो ॥
अर्थ धर्म कामना मुक्ति फल याचत जो सो पावत ।
अग्रदास अनुराग सहित अति राम जनम गुण गावत ॥३४२

प्रगट भये दशरथ के रघुबर ।
महा महोत्सव मंगल घर घर ॥
देखो आइ अवधपुर शोभा ।

नर नारी आनन्द उर गोभा ॥
सुनत सबै आतुर ह्वै धावै ।
हरी दूब दधि नृपति बधावै ॥
मोतियन चौक बधाये गावैं ।
नव तरुनी साथियै बनावैं ॥
धुजा पताका मण्डित घर घर ।
दिव्य दुकूल सुगन्ध सींचधर ॥
घर अम्बर बाजे बहु बाजैं ॥
मनहु महोदधि लहरी गाजैं ॥
विप्र वेद ध्वनि व्योमनि परसत ।
सुर संघट कुसुमन अति वर्षत ॥
भीर भूप गृह अतिसय राजे ।
कोउ लेवै कोउ देवै काजै ॥
भूमि बाजि गज विप्रन पाये ।
धेनु रतन अरु वस्त्र सुहाये ॥
याचक जन याचन जो आये ।
दान मान वांछित फल पाये ॥
कहत तपोधन वचन हमारो ।
चिरंजीव हो पुत्र तुम्हारो ॥
अग्र बधाई यह नित पावै ।
जनम कर्म लीला गुन गावै ॥३४३

लाल इन बोलन के बलि जैहौं ।
छोटे २ चरण धरत अति सुन्दर ठुमुकि ठुमुकि हुलरै हौं ॥
कटि किंकिनि पग नूपुर बाजै मधुरे शब्द सुनैहौं ।
सब बालक रघुबर छवि निरखत प्रेम प्रीति लपटै हौं ॥
घुंघर वारे अलक वदन पर मन्द हसन सुख पैहौं ।
जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक सारद गान करै हौं ॥
गोद राखि पय पान करावत दशरथ लेत बुलैहौं ।
यह छबि देखि मगन सुर मुनि भये रवि शशि कोटि लजैहौं॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यस गैहौं ।
अग्रदास भजु दशरथ नन्दन दिन प्रति दिन अधिकैहौं ॥३४४

रघुलाल पालने झूलैं । लखि मातु मुदित मन हूलैं ॥
अरुण कमल कर चरण विलोचन आनन छवि सुख मूलै ।
स्याम वरन तन पीत झँगुलिया भूषण अँग अनुकूलैं ॥
बाल केलि मृदु गाइ सुनावति अम्ब हरन भव शूलैं ।
अग्रअली सुनि सुनि मुनि हर्षत वर्षत सुर तरु फूलैं ॥३४५॥

मातु सन मागत शशि रघुलाल ।
इन गन करत अरत हठि रोवत लखि नभ नैन बिशाल ॥
अम्ब भुलावति देइ खिलौना कोकिल कीर मराल ॥
मानत नाहि अगम दरसायो कर गहि दर्पण हाल ।
अग्र हँसे लखि कोटि चन्द सम निज आनन छवि भाल॥३४६

श्री जानकी जन्म बधाई उत्सव

अखिल लोक श्री उदय भई हैं जनक रायपुर जाई ।
निरउपम कन्या निमि कुलके सीता ऐसी नांई ॥
बरनत विदुष पार नहिं पावत बाँणी रही लजाई ।
जाके चरण कमल भव नौका नाहिंन आन उपाई ॥
निगम सार सामान सुयश जेहि कहत तपोधन आई ।
ब्रह्म रूद्र अजहूं पद आश्रित अग्र दास बलि जाई ॥३४७

सुनैना रानी अपनी लली को दुलरावै ।
मुख चूमति अरु वदन बिलोकति मन में मोद न भावै ॥
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावें नारद ध्यान लगावै ।
हरि सहचरि बड़ भागिनि रानी अपनी गोद खिलावै ॥३४८

ठुमुक २ चलत चाल जन्क नन्दनी ।
मधुर बचन तोतरे त्रयताप मोचनी ॥
सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दसन झलकत उर माल सकल देव बन्दनी ॥
बाजत पग नूतुर मनो शामवेद करत गान क्षुद्र घंटि रुचिर नाद उर अनन्दनी ॥
जगत मात सखिन संग विहरत बहु करत रंग अग्र अली निरखत छबि भव निकन्दनी ॥३४८ क॥

सुनैना रानी बजत बधाई तेरे द्वार ।
प्रगटी सुता सुलक्षणि सुन्दरि मिथिला अवध शृँगार ॥
रघुकुल तिलक द्वार तेरे ऐहैं भूपति मुनिन समाज ।

अग्रअली की स्वामिनि प्रगटी रसिकन हिय सुख साज।। ३४८ख

जनक भवन की शोभा रानी फूले अंग न माई री।
गृह २ ते सब सखी सयानी मंगल कलश बनाई री।।
चित्र विचित्र सुदेश परस्पर शोभा वरनि न जाई री।
सजि२ चली भीर भइ वीथिन गज गामिनि अति राजैरी।।
अतिहि छवीली सहज रँगीली पग नूपुर धुनि बाजै री।
सची सहित सब सुर पुर नारी शिवा सहित ब्रह्मानी री।।
लतन सहित सोभित भू देवी बैठि है राज दुवारी री।
सुर वनिता अरु नर की नारी अग्रअली बलिहारी री।।३४८ग

सिय वाल पालने झूलैं लखि मातु मुदित मन हूलैं।।
अरुण चरण कर कमल विलोचन आनन छवि सुख मूलैं।
गौर वदन तन पीत झँगुलिया भूषण अँग अनुकूलैं।।
वाल केलि मृदु गाय सुनावहि अम्ब हरण भव सूलैं।
अग्रअली सुनि सुर मुनि हरषत वर्षत सुर तरु फूलैं।।३४९

जयति चारुशीला चरण शरण मोद भरण पुंज।
अरुण वरण कमल रज पराग रस भ्रमर गुंज।।
सुजन हृदय वाश करण सकल सोक ताप हरण।
जनम मरण नसत रूप नवल धार रहन कुंज।।
श्री जानकी रमण विहार मिलत कृपा ते उदार।
विना चारुशीला कृपा रस कि रीति नहिं मिलंजु।।
श्री सर्वेश्वरि हमारि स्वामिनि बलिहारि जातु।
अलि विहारिणी तिहारि कोर कृपा की करंजु।।३५०

पुस्तक प्राप्ति स्थान–

श्री चारुशीला मन्दिर

(रसिक आचार्य गद्दी)

श्री चारुशीला बाग

श्री जानकी घाट, श्रीअयोध्या जी।

मुद्रकः–

प्रतिभा प्रिन्टिंग प्रेस, रानोपाली–अयोध्या